न जैसे तमगे सजा रखे हैं देश के प्रमुख शहरों ने।

बेंगलुरू • मोस्ट लिवेबल सिटी

ईज ऑफ लिविंग इंडेक्स 2020 के हिसाब से बेंगलुरु मोस्ट लिवेबल सिटी है। यह आकलन क्वालिटी ऑफ लाइफ, इकोनॉमिक एबिलिटी, सस्टेनेबिलिटी, एजुकेशन, हेल्थ के आधार पर होता है।

सूरत • फास्टेस्ट ग्रोइंग सिटीज

फास्टेस्ट ग्रोइंग सिटीज ऑफ इंडिया की सूची में सूरत पहले नंबर पर है। उसकी ग्रोथ रेट 9.17 फीसदी है। सिटी ऑफ फ्लायओवर्स भी कहते हैं। इस सूची के टॉप-3 में आगरा और बेंगलुरु भी शामिल हैं।

कोयम्बटूर • सेफेस्ट सिटी फॉर वुमन

सेफेस्ट सिटी फॉर वर्किंग वुमन के मामले में कोयम्बटूर नंबर एक पर है। महिलाओं के खिलाफ क्राइम रेट देश में सबसे कम 7.9% है। महिला अपराध रोकने के लिए अपना सिस्टम डेवलप किया है।

मैसूर • देश की पहली ग्रीन सिटी

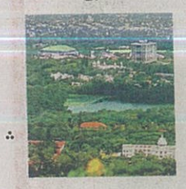

मैसूर देश की पहली ग्रीन सिटी कहलाती है। इसे देश की मोस्ट प्लांड सिटी भी कहते हैं। हैदराबाद वर्ल्ड ट्री सिटी की लिस्ट में शामिल है। 200 सिटी फारेस्ट के साथ मुंबई भी इसमें जगह बना चुकी है।

कोटा • देश की पहली सिग्नल फ्री सिटी

कोटा को देश की पहली और दुनिया की दूसरी सिग्नल फ्री सिटी बनाया है। इस पर 211 करोड़ खर्च हुए। करीब 25 किमी क्षेत्र में कोई सिग्नल नहीं है। थिम्पू दुनिया की पहली सिग्नल फ्री सिटी थी।

ऑटोमोबाइल में नई ऊंचाई पर...

कार के डैश बोर्ड से एयरक्राफ्ट के पैनल तक बना रहा इंदौर

550 से अधिक उद्योग, 2 लाख को सीधे रोजगार

25,000 करोड़ का उत्पादन इंदौर-पीथमपुर ऑटो सेक्टर में

20,000 चार पहिया वाहनों का उत्पादन हर माह हो रहा

इंदौर | ऑटोमोबाइल सेक्टर में फिर शहर नई ग्रोथ की ओर है। इंदौर-पीथमपुर मिलाकर 550 से अधिक उद्योग हैं। सांवेर रोड क्षेत्र की ऑटो मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग कंपनी में कार, बस और ट्रकों के डेश बोर्ड से एयर क्राफ्ट के एसी डक्ट व साइट पैनल बना रहे हैं। टाटा, अशोक लीलैंड, आयशर, वाल्वो, टेस्ला से लेकर यूएई की कंपनियों को एक्सपोर्ट भी कर रहे हैं।

बढ़ता इंदौर... इस वर्ष का एक्सपोर्ट 13500 करोड़, हेल्थ में 30 प्रतिशत की बढ़ोतरी, ग्रीन कवर भी 4 प्रतिशत बढ़ा

भास्कर टीम | इंदौर

इंदौर की मौजूदा रफ्तार का अंदाजा इस बात से भी लगा सकते हैं कि पिछले 10-12 साल में यहां इंडस्ट्री की संख्या दोगुना से अधिक हो गई है। वर्ष 2020-22 में दिसंबर माह तक ही एक्सपोर्ट 13 हजार 500 करोड़ रहा है। हेल्थ सेक्टर में 30% की ग्रोथ दर्ज की गई है तो शहर का ग्रीन कवर भी 4% बढ़ गया है। एक्सपर्ट के अनुसार 15 साल पहले 600 से 700 बड़ी इंडस्ट्री थी, जिनकी संख्या अब ढाई हजार से ज्यादा है। इनमें डेढ़ से दो लाख लोगों को सीधे तौर पर और 5 लाख लोगों को अप्रत्यक्ष रोजगार मिल रहा है। जिला उद्योग केंद्र के अधीन भी करीब 2500 रजिस्टर्ड हैं।

शिक्षा: 10 साल पहले शहर के विभिन्न कॉलेजों व यूनिवर्सिटी में 286 कोर्सेस पढ़ाए जाते थे, जिनकी संख्या 530 हो गई है, जिनमें 3.20 लाख विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। 10 साल पहले कॉलेजों की संख्या मात्र 175 थी और छात्रों की संख्या भी 1.45 लाख थी। इन वर्षों में 48 नए कॉलेज और 10 निजी यूनिवर्सिटी आई हैं। 310 से ज्यादा कोचिंग हैं, जिनमें 5 लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं।

हेल्थ: इंदौर में हर दिन 40 हजार मरीज आते हैं। करीब 229 लोगों पर अस्पतालों में एक बैड उपलब्ध है। वर्ष 2012-13 में 8 हजार बैड थे, जो अब 14 हजार हो चुके हैं। कॉर्पोरेट और ट्रस्ट के 20 और कुल अस्पतालों की संख्या 275 है। लैब व डायग्नोस्टिक सेंटर्स की संख्या भी 500 से ज्यादा है।

कार्बन क्रेडिट से कमाए 10 करोड़ रुपए

शहरी सीमा में 69.8 वर्ग किमी एरिया ग्रीन कवर है। 2021 में यह 65.91% था। ग्रीन कवर 4% बढ़ा है। बगीचों की संख्या 1400 तक पहुंच गई है। कार्बन क्रेडिट से शहर 10 करोड़ कमा चुका है। ग्रीन एनर्जी के लिए 4500 से ज्यादा भवनों में 12 हजार सोलर प्लांट लगाए गए हैं।

भास्कर Research

देश के शीर्ष शहरों में इंदौर की स्थिति

ओवरऑल रैंकिंग	क्वालिटी ऑफ लाइफ	इकोनॉमिक एबिलिटी	सस्टेनेबिलिटी
1. बेंगलुरू	1. चेन्नई	1. बेंगलुरु	1. पुणे
2. पुणे	2. कोयम्बटूर	2. नई दिल्ली	2. विशाखापट्टनम
3. अहमदाबाद	3. नवी मुंबई	3. अहमदाबाद	3. पिंपरी चिंचवड़
4. चेन्नई	4. इंदौर	4. ठाणे	4. अहमदाबाद
5. सूरत	5. वडोदरा	5. चेन्नई	5. ग्वालियर
6. नवी मुंबई	6. पुणे	6. ग्रेटर मुंबई	6.रायपुर
7. कोयम्बटूर	7. सूरत	7. कोयम्बटूर	7. प्रयागराज
8. वडोदरा	8. भोपाल	8. ग्रेटर मुंबई	8. सूरत
9. इंदौर	9. कल्याण	9. सूरत	9. नवी मुंबई
10. ग्रेटर मुंबई	10. अहमदाबाद	10. पिंपरी चिंचवड़	10. इंदौर
	13. इंदौर	21. इंदौर	

*ईज ऑफ लिविंग इंडेक्स की रिपोर्ट के अनुसार

सफाई पर गर्व; आर्थिक मामलों में थोड़े कमजोर सुरक्षा, शिक्षा व क्वालिटी ऑफ लाइफ में बेहतर

भास्कर Analysis

स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर भोपाल की टीम व अन्य एक्सपर्ट द्वारा ईज ऑफ लिविंग इंडेक्स, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस, म्युनिसिपल परफार्मेंस इंडेक्स के आधार पर विभिन्न शहरों के साथ इंदौर की तुलनात्मक स्टडी की गई। इसमें सामने आया कि इंदौर ऊर्जा की खपत, एन्वायर्नमेंट, सस्टेनेबिलिटी और हेल्थ पर अन्य शहरों के मुकाबले सही दिशा में काम कर रहा है। ईज ऑफ लिविंग, क्वालिटी ऑफ लाइफ, एजुकेशन, हाउसिंग एंड शेल्टर के साथ ही सेफ्टी एंड सिक्योरिटी पर हम लगातार बेहतर कर रहे हैं। सफाई में तो हम देश में शीर्ष पर हैं ही। ऐसे ही म्युनिसिपल परफार्मेंस इंडेक्स में हम लगातार नंबर वन पर बने हुए हैं। ईज ऑफ लिविंग इंडेक्स में नौवें नंबर पर हैं, लेकिन उसी के कुछ मापदंडों पर 13वें व 21वें नंबर पर भी हैं। साथ ही सिटीजन परसेप्शन के मामले में सिलवासा, दावाणगेरे, सोलापुर, जोधपुर, इम्फाल, अगरतला जैसे शहर भी हमसे आगे हैं और हम 49वें नंबर पर आते हैं। ग्रीन बिल्डिंग, इकोनॉमिक अपॉर्च्युनिटी, लेवल ऑफ इकोनॉमिक डेवलपमेंट, इकोनॉमिक एबिलिटी, रिक्रिएशन, मोबिलिटी के मापदंड पर थोड़ा कमजोर साबित हो रहा है। एक्सपर्ट का मानना है कि कुछ छोटे सुधारों से भी इंदौर को देश की टॉप-10 सिटीज में शामिल किया जा सकता है।

मैन्युफैक्चरिंग यूनिट की संख्या बढ़ाना होगी... स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर के असिस्टेंट प्रोफेसर मयंक दुबे का कहना है कि आर्थिक मोर्चे पर इंदौर को आगे ले जाने के लिए मैन्युफैक्चरिंग यूनिट की संख्या बढ़ाना होगी। परकैपिटा इम्प्लायमेंट, उद्योगों की संख्या बढ़ाने से ही इकोनॉमिक अपॉर्च्युनिटी बढ़ेगी।

भास्कर एक्सपर्ट

▪ संजय दुबे
प्रमुख सचिव, ऊर्जा विभाग

▪ नीरज मंडलोई
प्रमुख सचिव, नगरीय प्रशासन

▪ स्वतंत्र कुमार सिंह
सेक्रेटरी, नीति आयोग मध्यप्रदेश

▪ विवेक श्रोत्रिय
एएमडी, मध्यप्रदेश टूरिज्म विकास बोर्ड

▪ चंद्रमौलि शुक्ला
आयुक्त, हाउसिंग बोर्ड मप्र

▪ डॉ शुभाशीष बैनर्जी
डिप्टी सेक्रेटरी, पर्यावरण मप्र

▪ मयंक दुबे
असि. प्रो., स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर

▪ जगशय शाह
चेयरमैन, क्रेडाई इंडिया

5/03/23